कश्मीरी लोक-गीतों की परंपरा और उनका संरक्षण

-अजय प्रकाश

शोध सार-

लोक गीत मानव समाज की मौलिक अभिव्यक्ति हैं। यह एक ऐसी धरोहर है, जो न केवल हमारी संस्कृति और परंपराओं को जीवित रखती है, बल्कि हमें हमारी जड़ों से भी जोड़े रखती है। यह शोध पत्र कश्मीर के लोक गीतों की समृद्ध परंपरा, उनके सांस्कृतिक महत्व और सामाजिक संदर्भों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। कश्मीरी लोक गीत, न केवल क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को दर्शाते हैं, बल्कि प्राकृतिक सौंदर्य, धार्मिक भक्ति, प्रेम और सामाजिक मुद्दों को भी अभिव्यक्त करते हैं। यह अध्ययन इन गीतों की उत्पत्ति, शैली, और संरचना के साथ-साथ उनके संरक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। आधुनिकता के प्रभाव में इन गीतों पर आए परिवर्तनों को भी रेखांकित करते हुए, यह पत्र कश्मीरी लोक संगीत की अद्वितीयता और उसके संरक्षण के उपायों पर विचार करता है।

बीज शब्द- वनवुन, रूफ, सौन्दर, जलमुर्गी, कोशलहोम, नवरेह, फ्यूजन संगीत

लोक गीत का सामान्य परिचय-

लोक शब्द अंग्रेजी के ‘Folk’ का पर्यायवाची शब्द है जिसका अर्थ ‘जन’ या ‘जनसाधारण’ होता है। भारतीय लोक साहित्य में लोक शब्द का प्रयोग प्राचीन काल से होता आ रहा है। यह संस्कृत में लोक् दर्शने में 'घञ्' प्रत्यय जोड़ने से हुआ है। इस धातु का अर्थ है - ‘देखना’। इसका लट्लकार में अन्य पुरूष एक वचन रूप ‘लोकते’ होता है। इस प्रकार, लोक शब्द का मूल अर्थ है- ‘देखनेवाला'।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक के विषय में लिखा है कि “लोक का अर्थ जनपद या ग्राम नहीं है बल्कि नगरों व गांवों में फैली हुई वह सम्पूर्ण जनता है जिनके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं हैं। ये लोग नगर में परिष्कृत रूचि संपन्न तथा सुसंस्कृत समझने वाले लोगों की अपेक्षा अधिक सरल और अकृत्रिम जीवन के अभ्यस्त होते हैं। परिष्कृत रुचि वाले लोगों की समूची विलासिता और सुकुमारता को जीवित रखने के लिए जो भी वस्तुएँ आवश्यक होती हैं, उसको उत्पन्न करते हैं।”

लोक गीतों की उत्पत्ति के विषय में यदि हम बात करें तो इनकी उत्पत्ति मानव जाति की उत्पत्ति से संबंधित है। सर्वप्रथम कब और किसने इसकी रचना की इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं है। कुछ विद्वान इन्हें समूहगत रचना मानते हैं तो कुछ व्यक्तिगत।

जैकब ग्रिल का कहना है कि "लोक गीत किसी व्यक्ति विशेष की रचना नहीं है। जिसने इन्हें गाया वह केवल इनका गायक था रचयिता नहीं।"

लोक गीतों की रचना के संबंध में कुंज बिहारी जी का मत सर्वाधिक ग्राह्य है क्योंकि गीतों को सर्वप्रथम एक ही व्यक्ति ने गाया होगा तथा उसको सुनकर दूसरे ने उसको दुहराया होगा। तब वह एक व्यक्ति से उठकर पूरे समुदाय का गीत बन गया जो आज तक एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को परंपरा द्वारा हस्तांतरित हो रहा है।

इस प्रकार लोक गीतों की उत्पत्ति सृष्टि की उत्पत्ति से संबंधित है। सृष्टि के आरम्भ से ही लोकगीत मानव सभ्यता में घुलकर चले आ रहे हैं। इनका इतिहास उतना ही प्राचीन है जितनी मानव सभ्यता।

कश्मीरी लोक-गीत : एक झलक

कश्मीर, जिसे "धरती का स्वर्ग" कहा जाता है, अपनी अद्भुत प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और ऐतिहासिक महत्व के लिए विश्वप्रसिद्ध है। हिमालय की गोद में स्थित कश्मीर, न केवल अपनी हरी-भरी घाटियों, शांत झीलों और बर्फ से ढके पहाड़ों के लिए जाना जाता है, बल्कि इसकी सांस्कृतिक परंपराएं भी इसे विशेष बनाती हैं। यहाँ की संस्कृति बहु-धार्मिक, बहु-भाषायी और बहु-आयामी है, जिसमें संगीत, कला, साहित्य और हस्तशिल्प का एक गहरा योगदान है।सामान्य रूप से ललित कलाएँ और विशेष रूप से संगीत कश्मीर की शानदार सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण घटक है। घाटी का संगीत समृद्ध और विविध है और इसमें तीन प्रमुख शैलियाँ शामिल हैं: कश्मीर का लोक संगीत, कश्मीर का आधुनिक प्रकाश संगीत और कश्मीर का शास्त्रीय संगीत।

कश्मीर की समृद्ध परंपरा का एक अभिन्न हिस्सा इसके लोक गीत हैं। ये गीत यहाँ के समाज, रीति-रिवाजों, त्योहारों, धार्मिक अनुष्ठानों और प्रकृति के प्रति प्रेम को

अभिव्यक्त करते हैं। कश्मीर के लोक गीत न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर और सामूहिक स्मृतियों का जीवंत दस्तावेज भी हैं।

कश्मीरी लोक गीतों की मुख्य विशेषता इनकी सादगी और भावप्रवणता है। ये गीत प्रकृति के साथ गहरे संबंध को दर्शाते हैं। इनकी धुनें मधुर और हृदयस्पर्शी होती हैं। कश्मीरी भाषा के साथ-साथ डोगरी, लद्दाखी और पंजाबी जैसी भाषाओं में भी लोक गीतों की परंपरा देखने को मिलती है। लोक गीतों में यहाँ की संस्कृति, प्रेम, विरह, धार्मिक आस्था, और सामाजिक मुद्दों को बड़े ही मार्मिक और सहज तरीके से पिरोया गया है।

ऐसा देखा गया है कि कश्मीरी लोक गीतों में उल्लास की कमी पायी जाती है इसलिए हास्य रस कम देखने को मिलता है। मोहन कृष्ण दर के अनुसार- "कश्मीर के मिरासियों और नाविकों के गीतों में हास्य रस का पुट पाया जाता है। भजन के गीतों में, जिन्हें साँझा या पराती भी कहते हैं, शांत रस पाया जाता है।"

देवेंद्र सत्यार्थी ने कश्मीरी लोक गीतों को निम्न शाखाओं में बांटने का प्रयास किया है-

- वनवुन- विवाह गीत
- बाँड जशन- वे गीत जिन्हें बाँड(ग्रामीण नट) अपने गीत नाटकों में गाते हैं।
- बच-नगमा(जश्न)- इन्हें 'बच-नगमा' नर्तक अपनी नृत्य प्रदर्शनियों में गाते हैं।
- सोंत-ग्यवुन- 'सोंत' का शब्दार्थ है वसंत। वसंत के स्वागत में गाये जाने वाले गीत।
- कथ-ग्यवुन(कथा-गीत)- इन गीतों में नायक या नायिका का सजीव चित्र रहता है।
- लोल-ग्यवुन- 'लोल' का शब्दार्थ है प्रेम। इनमें प्रेममय अनुभूतियाँ प्रधान रहती हैं।
- ललावुन- लोरियाँ
- गिंदुन-ग्यवुन- बच्चों के गीत
- यज्ञोपवीत ग्यवुन- यज्ञोपवीत संस्कार के समय हिंदू घरों में गाये जाने वाला गीत।
- रूफ- रूफ नृत्य के साथ गाये जाने वाला गीत।

- ❖ हाँजियों के गीत

डॉ. उपाध्याय ने वैज्ञानिक रीति के अनुसार लोक गीतों का वर्गीकरण किया है। उनके वर्गीकरण को निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है:

- ❖ संस्कार-संबंधी गीत- पुत्र-जन्म, मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह, गवना, मृत्यु आदि।
- ❖ ऋतु-संबधी गीत- कजली, हिंडोला, होली, चेता, बारहमासा आदि।
- ❖ व्रत-संबंधी गीत- नागपंचमी, गोधन, पिंडिया, छठी माता आदि।
- ❖ जाति-संबंधी गीत- अहीरों, दुसाधों, गोड़ों, कहारों, धोबियों आदि के गीत।
- ❖ क्रिया-संबंधी गीत- रोपनी, सोहनी, जंतसार, चरखा।
- ❖ विविध गीत- झूमर, अलंचारी, पूर्वी, निर्गुण, खेल आदि के गीत।

उपर्युक्त वर्गीकरणों के आधार पर हम कश्मीरी लोक-गीतों को देखने का प्रयास करेंगे तो हमें अनगिनत लोक-गीत देखने को मिल जाएँगे।

जब पुत्र का जन्म होता है तो कश्मीरी जनता उत्सव मानती है वहीं पुत्री के जन्म पर उनके मुंह पर विषाद छा जाता है। जिसका मुख्य कारण हिंदुओं में दहेज प्रथा है। महर्षि वाल्मीकि ने श्री राम के जन्मोवसर पर गंधर्वों तथा अप्सराओं द्वारा नाचने-गाने का उल्लेख किया है-

जगुः कलं च गन्धर्वा ननृतुश्चाप्सरोगणाः।
देवदुन्दुभयो नेदुः पुष्पवृष्टिश्च खाच्च्युता॥

शिक्षा के इतने प्रसार के बावजूद अभी भी कश्मीरी महिलाएँ ‘जायम कूर, कलस प्येयम तूर’ (लड़की उत्पन्न हुई मानो सिर पर कुल्हाड़ी गिरी) कहती सुनायी पड़ती हैं। विवाह के अतिरिक्त लड़की के किसी भी संस्कार पर गीत नहीं गया जाता। इसके विपरीत लड़कों के सभी संस्कारों पर नाच-गाना होता है।

शिशु के जन्म के सातवें दिन माँ और बच्चे दोनों को स्नान कराया जाता है। इस उत्सव को सौन्दर कहते हैं। मुसलमानों में इस दिन आस-पास की सभी स्त्रियां आकर गीत गाती हैं।

सितमे दोहय सौन्दर कअरमय
वाज़स द्युतुम पानह फ़रमाश

सातवें दिन तेरा स्नान (सौन्दर) किया है और रसोइए को अच्छे-अच्छे पकवान तैयार करने को स्वयं कह आई हूँ।

कश्मीरी पंडित यज्ञोपवीत को सबसे बड़ा संस्कार मानते हैं। बालकों का यह संस्कार प्रायः बारह वर्ष की अवस्था में होता है। इस संदर्भ में यह लोक गीत देखिए-

गरनावय या लिवुन या लेपन,
मअंज़िरात या मेंहदीरात,
दिवगोन,
यज्ञोपवीत और
कोशलहोम।

इस संस्कार के दस दिन पहले पूरे घर को गोबर से लीपा जाता है। मेंहदी रात को मेंहदी लगाने के बाद 'दिवोगान' (स्नान) और तीसरे दिन जनेऊ पहनाया जाता है। अपने सगे-संबंधियों से भिक्षा माँगना इस संस्कार की प्रधान विधि है। अगले दिन 'कोशलहोम' होता है और मेहमानों को भोजन कराया जाता है।

इसी प्रकार विवाह जैसे शुभ अवसरों पर गाये जाने वाले असंख्य गीत मिल जाते हैं। अनेक धर्मों में रीति-रिवाजों में भिन्नता होने के कारण विवाह गीतों का बाह्य पक्ष भिन्न होता है परंतु उनका आंतरिक भाव एक जैसा ही होता है।

शोकलम करिथ वन वुन ह्योतुमय
शुब फल दितिमय माजि बवाने
गर नाव नस जंगि कुस ओयेय
मंगला दीवी त नंदकीश्वर

अर्थात् हमनें 'शुक्ल' करके गान आरम्भ किया। माता भवानी ने अच्छे फल दिए। तुम्हें घर लीपने के समय किस की जंग आई। मंगला देवी जी और नंदकेश्वर आए थे।

विवाह के समय माता-पिता अपने पुत्र और पुत्रियों समेत रिश्तेदारों के यहाँ भोजन करने जाते हैं जिसे 'दपुन' कहते हैं।

दपुनस क्युतुये रथ मंगनोवमय,
सोव नेछुतुर वुछ नोवमय

शुभ मुहूर्त पर दावत खाने जा रही हो। तेरे लिए रथ मँगवाया है और राजा का हाथी भी मँगवाया है। चूँकि यह गीत बहुत लंबा है जिसका थोड़ा सा ज़िक्र यहाँ कर दिया गया है।

मेंहदी रात को लड़के और लड़की के हाथों में मेंहदी लगायी जाती है। इस क्रम में महिलाएँ पूरी रात गाती हैं। जिसमें प्रेम और विरह के गीतों के अलावा ऋतु व फिल्मी गीत भी गाये जाते हैं। यह गीत देखिए-

पथ ही थरिए तह ब्रोंठ रंगचरिये,
शामसोंदीरये कोड़ मोन्यन गछ।
वसुदीव राजनि नोशि तय कोरे,
ठोकरस छि मँगान बेहनस जाय।।

अर्थात् ऐ सुंदरी, तू ऐसे लगती है जैसे जूही की काली पर रंगीन चिड़िया हो। वसुदेव की लड़कियां और बहुएँ ठाकुर से बैठने के लिए स्थान माँगती हैं लेकिन उनको अपने घर ठहराया।

दुल्हन जब ससुराल जाती है तो उस वक्त महिलाएँ गाती हैं

संदुक तय कुंजह कर माजि हवालय,
नेर कूर्य वारिव्यन हवालय।

घर की सारी चाबियाँ माँ के हवाले कर और तू अपने ससुराल जा।

हिंदुओं की तरह मुसलमानों में भी विवाह के समय कदम-कदम पर गीत हैं।वहाँ भी विवाह मेंहदीरात से आरम्भ होता है। लड़की को मेंहदी लगाते वक्त महिलाएँ गाती हैं-

अज़ छम मअंजिरात पगाह येनिवोलुय,

कुकिलव पोट गुलि वुलुये।

आज मेंहदी रात है और कल बरात आएगी। कोयल (दुल्हन) ने इसलिए अपनी कलाइयों में रेशम की डोरी बाँधी है।

'निकाहनामा' पढ़ते समय स्त्रियां इस प्रकार गाती हैं-

हवालय करमख पीरि पीरानस,

चीर थफ करिज्यस दामानस।

तुझे पीरों के पीर (श्रेष्ठ पुरुष) के हवाले किया, उसका अंचल ज़ोर से थाम ले।

मृत्यु को सभी संस्कारों में अंतिम संस्कार माना गया है। ऐसे में जब किसी स्त्री का पुत्र मर जाता है तो महिलाएँ उसे 'जलमुर्गी'(अभागिन) कहती हैं। और उससे विलाप करते हुए प्रश्न पूछती हैं-

कोतुई गछख गिलिये? बेरि बेरि खाह!

क्यहे करनि गिलिये? ठूलन दिनि फ़ाह!

कअत्याह छिय गिलिये? काह किनह बाह!

अखा दितय गिलिये? पोत्रह मंजह काह!

क्यहय गोख गिलिये? खोदअई लादुख राह!

किधर जा रही हो अभागिन जलमुर्गी?

पगडंडी से अपने खेत की ओर!

क्या करने जा रही हो?

अंडे फोड़ने के लिए।

कितने अंडे हैं तेरे पास?

ग्यारह होंगे या बारह!

मुझे उनमें से एक दे दोगी?

बेटे की सौगन्ध, एक भी मेरे पास नहीं है!

उनका क्या हुआ?

वह ईश्वर को प्यारे हो गए!

विधवा मुसलमान स्त्रियां खेत में काम करते हुए मृत्युगीत गाती हैं-

व्यसि वनतय कोत गोम जानान,

कोरनम दिलस पारह छुम कति छाँड़ान।

सखी बोल मेरे दिल का राजा कहाँ चला गया? उसने मेरे दिल के टुकड़े कर दिए, बोलो वह मुझे कहाँ ढूँढ रहा है?

अपनी भौगोलिक वैविध्यता के कारण कश्मीरीयों के लिए ऋतुओं का महत्त्व बहुत अधिक होता है। भारत के मैदानी भागों की अपेक्षा यहाँ के ऋतुओं की अपनी अलग विशेषता है। वसंत आने पर सारी घाटी महक उठती है। वसंत ऋतु 'नवरेह' अर्थात् कश्मीरी वर्ष के आरम्भ (चैत्र शुक्ल पक्ष प्रथमा) से होता है। महिलाएँ इस ऋतु का स्वागत गीत गाकर करती हैं-

नोव नवरेह सोन्त है आवय

यि कुसुय द्यदिये वोय म्योन आवय।

हस्त्यन खसिथ आँगनस चावय,

आँगनस प्येयम छतरे छायय।

तथ तल लभिमय मोक्तफलि ढाये,

तिमनय करिमय मालअये।

सखियों नववर्ष और वसंत ऋतु आ गई। देखो, यह कौन आया है? लगता है मेरा भाई है। हाथी पर चढ़कर मेरे आँगन में आ गया और उसकी छाया में बैठकर मैंने मोती पिरोए। सखियों, नववर्ष हमारे लिए सुख का संदेश लेकर आया है। ठीक इसी प्रकार ईद, जन्माष्टमी जैसे अन्य त्योहारों पर भी लोक गीतों का चलन है।

अपने अथक परिश्रम द्वारा बोई गई फसल काटते समय किसान प्रसन्न हो उठता है। ऐसे में उसके दिल में प्रेम का भाव जागृत हो जाता है। वह अपनी प्रेमिका को पुकारते हुए कहता है-

नेरि वअलिये सोरे सामान लो लो।

करि छवनी-छवनी रोनि दामान लो लो।।

गैम शरमन्द दक्षिणक रुत अछि पोश।
केंहछि शूबिदार केंहछि जानान लो लो।
दूरह ग्रायन चान्यन नूर फोलवान।
सूर कोरथम स्वर्गिस्तान लो लो।।

मेरी प्रियतमा! शृंगार कर और घूँघर छनछनाती हुई मेरे पास आ। तेरी सुंदरता के सामने दक्षिण के मनभावन फूल भी शर्माते हैं। तू जब बालियाँ पहनती है तो चारों ओर प्रकाश फैलता है। आ, स्वर्ग से आई हुई अप्सरा मेरा दिल तेरे लिए तड़प रहा है।

वर्तमान में कश्मीरी लोक गीतों पर आधुनिक संगीत, पाश्चात्य प्रभाव और बदलती जीवनशैली का गहरा असर पड़ा है। पारंपरिक लोक गीत गाने वाले कलाकारों की संख्या कम हो रही है, और युवा पीढ़ी इनसे अनभिज्ञ होती जा रही है। इसके अलावा, आर्थिक और सामाजिक कारणों से पारंपरिक कलाकारों को अपनी कला छोड़ने पर मजबूर होना पड़ता है। यदि समय रहते इन गीतों को संरक्षित नहीं किया गया, तो यह सांस्कृतिक धरोहर सदा के लिए खो सकती है।ऐसे ढेरों लोक-गीत हैं जो दिन प्रतिदिन हमारी स्मृतियों से दूर होते जा रहे हैं। आधुनिकता के प्रभाव में लोग अपनी जड़ों को भूलने लगे हैं।

डिजिटल माध्यमों का उपयोग कर गीतों को रिकॉर्ड करके स्कूल और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में समावेशन और सांस्कृतिक उत्सवों का समय-समय पर आयोजन करके इन गीतों को संरक्षित रखा जा सकता है। लोक गीतों को आधुनिक फ्यूजन संगीत में शामिल कर युवा पीढ़ी को जोड़कर, स्थानीय कलाकारों को आर्थिक सहायता और सामाजिक पहचान देकर इसका संरक्षण किया जा सकता है। जिसमें सरकार और गैर-सरकारी संगठनों की सक्रिय भूमिका अपेक्षित है। इसके साथ ही वृत्तचित्र और मीडिया प्रचार के माध्यम से इन गीतों की पहुंच बढ़ाने पर भी ध्यान देना आवश्यक है। यह पहल कश्मीर की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखने में सहायक होगी।

निष्कर्ष- इस प्रकार हम देखते हैं कि कश्मीरी लोक-गीतों की परंपरा बहुत ही विस्तृत है। प्रत्येक अवसर पर पग-पग हमें लोक-गीतों की झलक देखने को मिल जाती है। कहने का आशय यह है कि जीवन के हर पहलू से संबंधित लोक-गीत विद्यमान हैं। संसार की अन्य

किसी भाषा के साथ यदि कश्मीरी लोक-गीतों की तुलना की जाए तो इन लोग गीतों का वैविध्य ज़्यादा ही होगा। कश्मीर के लोक गीत यहाँ के लोगों की सांस्कृतिक धरोहर और ऐतिहासिक पहचान का प्रतीक हैं। ये गीत इस क्षेत्र के जीवन, संघर्ष, प्रेम और अध्यात्म को स्वर देते हैं। आधुनिकता के इस युग में, इन लोक गीतों को संरक्षित रखना हमारी जिम्मेदारी है ताकि यह अनमोल परंपरा आने वाली पीढ़ियों तक पहुँच सके। कश्मीर के लोक गीतों का माधुर्य और गहराई पूरे विश्व को इस क्षेत्र की आत्मा से परिचित कराती है।

संदर्भ सूची-

- दर, मोहनकृष्ण, कश्मीर का लोक साहित्य, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-6 वर्ष-1963
- वाणी वितस्ता की, कश्मीरी लोक गीत, संकलन एवम् अनुवाद - मधुप, पृथ्वीनाथ जम्मू एण्ड कश्मीर अकादमी ऑफ़ आर्ट कल्चर एण्ड लैंग्वेजेज जम्मू, प्रथम संस्करण 1975
- परमार, श्याम, भारतीय लोक-साहित्य, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, वर्ष-1954
- शर्मा, रामविलास, लोक साहित्य का लोक तत्व, निर्मल पब्लिकेशन, शाहदरा नई दिल्ली, वर्ष- 2003
- तिवारी, सच्चिदानंद, आधुनिक हिंदी कविता में गीति तत्व
- https://srivalmikiramayana.com/en/1/18/17/

संपर्क:

शोधार्थी, हिंदी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय

मो.नं. - 8858778604

ईमेल - vidushak50.in@gmail.com